।।ओ३म्।।

मर्यादा पुरुषोत्तम

श्रीराम

का

प्रेरक स्वरूप

।

लेखक

डॉ. महेश विद्यालंकार

प्रकाशक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि.)

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दूरभाष : 011-23360150, 23365959

Website : www.thearyasamaj.org

E-mail : aryasabha@yahoo.com

आत्म-निवेदन

आर्य समाज का उदय सत्य सनातन वैदिक धर्म के पुनरुद्धार, प्रचार और प्रसार के लिए हुआ था। इसका वेद प्रतिपादित सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक-आध्यात्मिक चिन्तन है। इसके सिद्धान्त, विचार चिन्तन व मान्यताएं क्रांतिकारी और वैचारिक आन्दोलन वाले हैं। इस विचारधारा के मूल में तर्क, प्रमाण, युक्ति, सृष्टिक्रम, व्यावहारिकता और वैज्ञानिकता है। इसी कारण आर्यसमाज का उदय, संसार के लिए वरदान सिद्ध हुआ, यह कोई सम्प्रदाय, पंथ या मजहब आदि नहीं है। हिन्दुत्व के चिन्तन और जीवन-पद्धति में जो दोष, विकृतियां, गुरुवाद, अन्धविश्वास, गुरुडम, पाखण्ड, अज्ञान आदि आ गए थे, उनका आर्य समाज ने सच्चाई तर्क-प्रमाण ज्ञान व विचारों के आधार पर मार्जन किया। सच्चे अर्थ में आर्य समाज हिन्दुत्व का रक्षक व पहरेदार है। जब कभी हिन्दुओं व उनके धर्मग्रन्थों, महापुरुषों, चिन्तनधारा विचारों, आदर्शों आदि पर संकट आया, किसी ने आपत्ति व प्रश्न उठाया तभी आर्य समाज वीर भुआ बनकर रक्षार्थ सबसे आगे खड़ा हुआ।

महापुरुषों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर जो दोष, लांछन, बुराइयां तथा विकृतियां लादी गई, उन्हें आर्यसमाज ने व्यावहारिक तर्क पूर्ण ढ़ंग से दूर किया। कुछ लोग अज्ञान और भ्रमवश आर्यसमाज पर यह आक्षेप करते हैं कि आर्य समाज

श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों व परमात्मा आदि को नहीं मानता। परन्तु सच्चाई बिल्कुल इसके विपरीत है। जितना सच्चे अर्थों में इन महापुरुषों को और परमात्मा को आर्यसमाज मानता तथा जानता है, वैसा सत्य रूप में और कोई नहीं मानता। आर्यसमाज महापुरुषों के चित्र का सम्मान और चरित्र की पूजा करता है। लोग केवल चित्र की पूजा करते हैं, चरित्र को भूल रहे हैं। संसार श्रीराम को मानता है, श्रीराम के आदर्शों व बातों को नहीं मानता। लोग मुख से श्रीराम का उच्चारण करते हैं, मन में रावण की सोच रखते हैं। आर्य समाज कहता है-जो बोलते हो वैसा कार्य तथा आचरण भी करो। जगत् नाम तो श्रीराम का लेता है, परन्तु कार्य रावण के करता है तभी रामनाम, भक्ति, पूजा-पाठ आदि का प्रभाव व फल नजर नहीं आ रहा है।

यदि हम सीखना चाहें तो श्रीराम तथा रामायण से जीवन और समाज के लिए बहुत कुछ सीख सकते हैं। अपना जीवन, सोच-विचार, स्वभाव, व्यवहार आदि सुधार सकते हैं। श्रीराम व रामायण के प्रेरक आदर्शों,शिक्षाओं, उपदेशों मर्यादापालन जीवन-मूल्यों आदि से बिखरते, टूटते, भोग-वासना से पूर्ण जीवन-जगत् को शिक्षाप्रद आदर्श प्राप्त हो सकते हैं। वर्तमान में तरह-तरह की समस्याओं,दु:खों, कष्टों, चिन्ताओं,उलझनों, विवादों आदि में श्रीराम और रामायण की विचारधारा व चिन्तन दवाई का कार्य कर सकता है। जिन हालात में मानव-समाज गुजर रहा है, उनमें श्रीराम के जीवन-चरित्र तथा रामायण की प्रेरक शिक्षाओं की अत्यन्त

उपयोगिता और आवश्यकता है।

इसी भाव एवं भावना से प्रेरित होकर "श्रीराम का प्रेरक स्वरूप" लघु ट्रैक्ट जन-साधारण के लिए लिखने का प्रयास किया है। आज के सन्दर्भ में भूले-भटके जीवन एवं समाज को श्रीराम व रामायण सन्मार्ग व समाधान दे सकते हैं, केवल नाम लेने, पूजा-पाठ, आरती और जयकारा बोलने से जीवन-जगत संभलने व सुधरने वाला नहीं? जब तक हम श्रीराम एवं रामायण के जीवनदर्शन को आचारण एवं व्यवहार में नहीं लायेंगे। आज कथनी और करनी में तेजी से अन्तर आ रहा है। इसी कारण श्रीराम के धार्मिक देश में तेजी से अधार्मिकता अनैतिकता एवं राक्षसी वृत्ति बढ़ व फैल रही है। श्रीराम का जीवन-दर्शन व रामायण के प्रेरक उज्ज्वल सन्देश व शिक्षाएं हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा लघु पुस्तिका को धर्म प्रचारार्थ प्रकाशित कर रही है। इसके लिए सभी अधिकारीगण धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा ही नहीं, विश्वास है कि पाठकगण स्वयं लाभान्वित होंगे तथा अन्यों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित कर लाभान्वित करेंगे।

विनीत

महेश विद्यालंकार
बी.जे.29, पू. शालीमार बाग,
दिल्ली -110088

श्रीराम का प्रेरक स्वरूप

इस देश का सौभाग्य है कि यहां अनेक ऋषि-मुनि, सन्त-योगी, तपस्वी, त्यागी और बलिदानी महापुरुषों ने जन्म लिया है। महापुरुष किसी देश की सबसे बड़ी सम्पदा और विरासत होते हैं। उन्हीं महापुरुषों की परम्परा में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का स्मरण और नाम बड़ी श्रद्धा, भक्ति, सम्मान पूज्यभाव तथा आदर से लिया जाता है।

श्रीराम भारत के जनमानस में रोम-रोम और कण-कण में रमे हुए हैं। भारतीय संस्कृति पर श्रीराम की अमिट छाप है। श्रीराम का जीवन भारत का आदर्श जीवन माना जाता है। श्रीराम भारतीय जन-जीवन में धर्मभावना के प्रतीक हैं। श्रीराम एक आदर्श महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व महान था। उनमें मयादोचित, मानवोचित और देवोचित गुण थे। इसीलिए वे ''मर्यादा पुरुषोत्तम'' कहलाए।

हजारों वर्षों से कोटि-कोटि जन-मानस के प्रेरक भी राम का जीवन आदर्श एवं अनुकरणीय है। श्रीराम का चरित्र और आदर्श जीवन भारत की सीमाओं को लांघकर विदेशियों के लिए भी शान्ति, प्रेरणा और नवजीवन का दाता बनता जा

रहा है। श्रीराम के प्रति जन-जन आस्तिकता, धार्मिकता, पूज्यभाव को, मन्दिरों, तीर्थों, सत्संगां, कथाओं, सद्ग्रन्थों आदि में स्मरण करते और भक्तिभाव प्रकट करते हैं। आज शिक्षित अशिक्षित सभी उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते श्रीराम का नाम लेकर ही अपनी धार्मिक भावना और श्रद्धाभक्ति प्रकट करते हैं। श्रीराम का यहां तक महत्त्व है कि शव को श्मशान भूमि तक ले जाते समय भी रामनाम का उच्चारण करते हुए जाते हैं। जन सामान्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त श्रीराम के साथ जीते और मरते हैं।

आज तक श्रीराम और श्रीकृष्ण जैसे चरित्र-नायक धरती पर नहीं आए। श्रीराम का जीवन सत्य, मर्यादा, कर्त्तव्य, आदर्श, संस्कृति और धर्म का सुन्दर समन्वय है। महामानव के सभी श्रेष्ठ गुण, धर्म और कर्म राम के चरित्र में विद्यमान हैं। वे आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श मित्र, आदर्श पति, आदर्श शासक और दैवीय गुणों से सम्पन्न मर्यादा पुरुषोत्तम महापुरुष थे। उनका सम्पूर्ण जीवन मर्यादा एवं कर्त्तव्य-भावना से ओत-प्रोत है। वे भारतीय सभ्यता के रोल मॉडल हैं। संसार के लोग जब श्रीराम व रामायण के जीवनदर्शों को पढ़ते, सुनते, देखते हैं तो आश्चर्य में बोल उठते हैं? क्या ऐसी भी आदर्श प्रेरक घटनाएं, महापुरुष व बातें इतिहास में कभी हुई हैं? श्रीराम तथा रामायण भारत के गौरवपूर्ण उच्च आदर्शों तथा उत्कर्षकाल के प्रमाणिक हस्ताक्षर हैं। ऐसा अद्वितीय महामानव संसार की अन्य भूमि पर न मिलेगा।

हमारा सौभाग्य है कि हम ऐसे दिव्यात्मा मर्यादा पुरुषोत्तम, युगपुरुष श्रीराम के आदर्शों व जीवन मूल्यों की परम्पराओं के उत्तराधिकारी हैं। श्रीराम की स्मृति में ही हम प्रतिवर्ष रामनवमी और विजय दशमी के पर्व मनाते हैं। जलसे, जुलूस, रामलीलाएं, मेले, जोर-शोर से जय-जयकार, कीर्तन, पाठ-पूजा आदि करते हैं। किन्तु उनके प्रेरक आदर्श चरित्र से जीवन, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए कोई प्रेरणा, चेतना, भावना, सुधार, निर्माण और संकल्प नहीं लेते। यही मूल में भूल हो रही है। हम महापुरुषों के तप-त्यागपूर्ण चरित्रों तथा आदर्शों को जीवन-जगत से नहीं जोड़ पा रहे हैं।

श्रीराम हमारे व्यवहार और आचरण में नहीं दिखाई देते हैं। उनके आदर्शों, मर्यादा-पालक जीवन कार्यों व कर्त्तव्यों से जीवन-जगत में व्याप्त चिन्ता, अशान्ति, संघर्ष, भ्रष्टाचार, पतन, अतृप्ति दु:खों आदि के लिए समाधान प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। श्रीराम का प्रेरक चरित्र, जीवन, गुण, कर्म स्वभाव और आदर्श सार्वकालिक, सार्वजनिक, सार्वदेशिक और सार्वभौम हैं। वे हर युग में नित्य नूतन, प्रेरक, उद्बोधक एवं सन्मार्ग-दर्शक हैं। श्रीराम का प्रेरक जीवन-दर्शन और रामायण के उच्चादर्श आज के भौतिकवादी एवं भोगवादी जीवन जगत क लिए अत्यन्त उपयोगी व शिक्षाप्रद हैं। इन्हीं शिक्षाप्रद बातों और आदर्शों से भूली-भटकी मानव जाति को सन्मार्ग व प्रेरणा मिलेगी। श्रीराम का प्रेरक जीवन ही हमें राक्षसवृत्ति से हटाकर

देववृत्ति की ओर प्रवृत्त करेगा। श्रीराम को धर्मावतार माना जाता है। धर्म का साक्षात् स्वरूप श्रीराम के जीवन में अवतरित हुआ है। आज भी श्रीराम के जीवन की घटनाएं आदर्श, मर्यादाएं, जीवन दृष्टि आदि भूली-भटकी, लक्ष्यविहीन हिन्दूजाति के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं। चाहे वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, धार्मिक, आर्थिक या अन्तर्राष्ट्रीय कैसी भी समस्याएं हों, हर जगह रामकी रीति, नीति, प्रीति एवं व्यवहार उनके समाधान का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए प्रेरक तीर्थ स्थल है। श्रीराम हमारी आस्था, श्रद्धा, विश्वास व प्रेरणा के आदर्श स्रोत हैं।

श्रीराम हर दृष्टि से जीवन चेतना के प्रकाश पुञ्ज हैं। महापुरुष समय-समय पर हमें संभालते, सुधारते और सन्मार्ग दिखाते हैं। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन तप-त्याग कर्त्तव्य-मर्यादा और भाईचारे का आदर्श रूप रहा है। श्रीराम के जीवन चरित्र पर अनेक ग्रन्थ व रामायणें विभिन्न भाषाओं में हैं, किन्तु श्रीराम का असली प्रमाणिक जीवन का सत्य स्वरूप वाल्मीकि रामायण में ही मिलता है। विभिन्न रामायणों, साहित्य, नाटकों, श्रीराम कथाओं सीरियलों पिक्चरों रामलीलाओं आदि में श्रीराम का सत्य स्वरूप, प्रेरक तथा आदर्श जीवन चरित्र ओझल हो रहा है, जो आज रामलीलाओं, कथाओं, मन्दिरों, सीरियलों पिक्चरों आदि में दिखाया, सुनाया व बताया जा रहा है। उसे ही हम सत्यवचन मान रहे हैं। इससे बड़ी हानि व विकृतियां आ

रही हैं। श्रीराम का असली सत्य स्वरूप छूटता और भूलता जा रहा है।

हमें आज इस भोगी, विलासी, भौतिकवादी युग में, तेजी से टूटते-छूटते सभी आदर्शों, परम्पराओं, मान्यताओं तथा अनैतिक मूल्यों के वातावरण में युगपुरुष श्रीराम के आदर्श एवं मान्यताएं ही हमें और जीवन-मूल्यों को बचा सकते हैं। इन्हीं आदर्शों मूल्यों व शिक्षाओं को अपनाकर ही यह हिन्दू (आर्य) जाति बच सकती है। श्रीराम के गुण,कर्म-स्वभाव तथा जीवन की प्रत्येक घटना के पीछे समग्र मानव-जाति के लिए अमर सन्देश भरे पड़े हैं। आओ, हम उन तक पहुंचें, उन्हें समझें व समझाएं और जीवन में उतारें तभी राम का सच्चा स्मरण सार्थक होगा। श्रीराम को मानने और चित्रपूजा के साथ-साथ श्रीराम के आदर्शों को भी माने व जानें तभी बात बनेगी। आज श्रीराम को मानते हैं श्रीराम व श्रीकृष्ण की नहीं मानते हैं। हम उनकी बातों को व्यवहार व आचरण में नहीं लाते हैं। मन्दिर में राम-राम बोलते हैं, बाहर रावणवृत्ति एवं अधार्मिक कर्मों को अपनाते हैं। संक्षेप में श्रीराम के जीवन-वृत्तान्त एवं घटित घटनाओं से आज के जीवन-जगत को क्या सीख, प्रेरणा और शिक्षा मिलती है। उसका साररूप प्रस्तुत है।

रामायण के आरम्भ में श्रीराम जी के जन्म का वृत्तान्त है। राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया। इसमें अनेक विद्वानों, ब्राह्मणों और ऋषि-मुनियों ने भाग लिया। यज्ञ सम्पन्न हुआ।

दशरथ का घर सन्तान-सुख से भर गया।

इससे ज्ञात होता है व प्रेरणा मिलती है कि यज्ञ मानव की सभी कामनाओं व सुखों की पूर्ति का श्रेष्ठ साधन रहा है। यज्ञ हमारी संस्कृति की बहुत बड़ी विशेषता है। यज्ञ के द्वारा अनेक रोग दूर होते हैं और वातावरण शुद्ध व पवित्र बनता है। यज्ञ की अनन्त महिमा है। भारतीय दर्शन में यज्ञ को जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक जोड़ा गया है। पर्यावरण की शुद्धि का श्रेष्ठ वैदिक उपाय यज्ञ को कहा है। यज्ञ से जीवन-जगत श्रेष्ठ व पवित्र बनता है। वेद कहता है-यज्ञ से आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन-स्वास्थ्य एवं मोक्ष तक प्राप्त किया जा सकता है।

आज के मानव ने यज्ञ करना और कराना छोड़ दिया है। सन्तान के लिए मन्दिरों-मस्जिदों, देवी-देवताओं और पाखंडी साधुओं के चक्कर में पड़कर वह दुःख उठा रहा है। राम का चरित्र प्रेरणा देता है कि अज्ञानता पूर्ण बातों को छोड़कर यज्ञ श्रेष्ठ कर्म व उपाय करो, सन्तान के लिए त्याग, संयम, नियम आदि का पालन करो। शास्त्र कहते हैं ***पुत्र कामो यजेत*** यदि सन्तान की इच्छा है तो यज्ञ करो। ***स्वर्ग कामो यज्ञेत*** यदि स्वर्ग चाहते हो तो यज्ञ करो। उपयोगी, निरोगी औषधि युक्त यज्ञ करने से शरीर से विजातीय तत्त्व निकलते हैं। अनुकूलता आने पर सन्तान-लाभ मिलता है। यज्ञ के भौतिक व आधात्मिक लाभ हैं। भारत यज्ञीय देश कहलाता है।

आर्य समाज संसार को यज्ञ का सत्य स्वरूप बताता है।

श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न बड़े हुए तो गुरुकुल में शिक्षा के लिए भेजे गए, जहां सब को समान शिक्षा मिली। कोई भेदभाव नहीं, धनवान् और निर्धन का कोई प्रश्न नहीं था। इस देश की प्राचीनतम शिक्षा पद्धति गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही थी। जहां भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों विद्याओं का प्रशिक्षण दिया जाता था। गुरुकुल शिक्षा के विचार संस्कार, विद्या, शिष्टाचार दिनचर्या, खान-पान और रहन-सहन मनुष्य को पूर्णता की ओर ले जाते हैं।

विद्या जीवन को उच्च, श्रेष्ठ और महान बनाती है। विद्या से व्यक्ति विद्वान्, धर्मात्मा बनता और देवत्व को पाता है। आज के समाज में शिक्षा का अर्थ बदल गया है। वह जीवन दृष्टि तथा जीवन मूल्यों एवं आदर्शों से दूर हो रही है। वर्तमान शिक्षा में असमानता, मंहगापन, आदर्शहीनता और जीवन के उद्देश्य से दूर हो रही हैं वर्तमान शिक्षा पद्धति में धर्मशिक्षा, नैतिक शिक्षा, राष्ट्रीय भावना आदि का अभाव हो रहा है। श्रीराम का चरित्र व आदर्श इस भयंकर दिशाहीन शिक्षा-जगत् को चेतना एवं प्रेरणा दे रहा है कि शिक्षा सबके लिए एक जैसी हो। गुरु की दृष्टि में धनवान-निर्धन विद्यार्थी बराबर हों। शिक्षा चरित्र, जीवन और संस्कारों से जुड़ी हो, शिक्षा में मानव को मानव बनाने वाले संस्कार, प्रेरणा व विचार हों। शिक्षा-स्थल प्रकृति की गोद में हो, जिससे विद्यार्थी विषय-वासना, शृंगार

और दुर्व्यसनों से बच सकें। गुरुकुलीय शिक्षा से ही राम के चरित्र में दैवीय गुणों का विकास हुआ। उन्हें मर्यादापालन के संस्कार मिले।

शिक्षा के बाद राम यज्ञ के रक्षार्थ महर्षि विश्वामित्र के साथ वन जाते हैं। इस घटना से संकेत मिलता है कि प्राचीनकाल में क्षत्रिय बालक कितने बलशाली, पराक्रमी, निर्भीक और ब्रह्चर्य के व्रती होते थे। छोटी-सी आयु में राम और उनके भाई ने ताड़का राक्षसी और कई उपद्रवी राक्षसों को मारा। बड़ी वीरता, दृढ़ता और निर्भयता से यज्ञ की रक्षा की। इससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमारे बच्चों में ब्रह्मचर्य, बल, तेज तथा क्षात्रधर्म के प्रति लगाव हो, अन्याय का विरोध तथा उसे मिटाने की भावना जागृत हो। बच्चों के जीवनों में निर्भीकता, दृढ़ता, साहस, वीरता और श्रेष्ठ कर्मों की रक्षा के लिए उत्साह होना चाहिए। उन्हें तपस्वियों, विद्वानों, धार्मिक व्यक्तियों की रक्षा के लिए संकल्पी व तत्पर रहना चाहिए। सामने कठिन-से-कठिन कार्य हो तो भी हंसते-मुस्कराते हुए आन-बान-शान के साथ आगे बढ़ते जाना चाहिए। अपने कर्त्तव्य-पथ से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। बाल्यकाल में मिले संस्कार-विचार, शिष्टाचार तथा लोक व्यवहार की बातें जीवन भर काम आती हैं। आज बच्चों और युवापीढ़ी को अपनी जड़ों, जीवन मूल्यों, आदर्शों, इतिहास तथा परम्पराओं से जोड़ने की जरूरत है। श्रीराम को बचपन में जो संस्कार, विचार, शिक्षा दी गई, वही

आगे पल्लवित पुष्पित हुई। आज की युवापीढ़ी आचार-विचार, से संस्कार विहीन होकर राक्षसवृत्ति की ओर बढ़ रही है। श्रीराम के जीवन से हमें बहुत कुछ सीखने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने सर्वत्र मर्यादाओं व आदर्शों का पालन किया। हम भी मानवीय मूल्यों और मर्यादाओं की रक्षा करें।

उसके बाद राम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ मिथिला नगरी जाते हैं वहां विवाह का वर्णन है। उस काल में स्वयंवर की प्रथा थी। नारी को अपना जीवनसाथी चुनने का पूर्ण अधिकार था। वर और वधू ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गृहस्थाश्रम को सुख से व्यतीत करते थे। विवाह भोग-विलास के लिए न होकर श्रेष्ठ कर्मों और सन्तान-प्राप्ति के लिए होता था। राम के विवाह के आदर्श से आज के मानव को प्रेरणा और आदर्श मिलता है कि विवाह गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर होने चाहिए। विवाह किसी लालच या स्वार्थ से प्रेरित होकर न हो। वर-वधू में समानता हो। अनमेल तथा बाल-विवाह न करें। नारी भी पुरुष के समान अपने अधिकार के लिए स्वतन्त्र है।

आज विवाह का रूप, स्वरूप तथा आदर्श बदल रहा है। विवाह प्रदर्शन, दहेज-धन के लालच, रूप-सौन्दर्य के आकर्षण में हो रहे हैं। राम का विवाह-प्रकरण आदर्श मर्यादा, शालीनता और प्रेरणा पूर्ण है। विवाह भारत संस्कृति में गृहस्थ का प्रवेश-द्वार माना गया है। इसके मूल आधार में गुण, कर्म,

स्वभाव, आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन आदि हैं। विवाह में सीमा, ठहराव व मर्यादाओं का बंधन होता है। श्रीराम ने आजीवन इस सीमा और मर्यादा को निभाया। वे एक पत्नीव्रती थे। दूसरा विवाह नहीं किया। श्रीराम के जीवन से युवापीढ़ी को सीख व सबक लेना चाहिए। हमारे यहां एक बार हाथ पकड़कर छोड़ा नहीं जाता है। आज तेजी से विवाह सम्बन्ध टूट-छूट और बिखर रहे हैं। इससे व्यक्ति परिवार व समाज विकृत हो रहा है। दाम्पत्य जीवन में विवाद, कलह बढ़ रहा है।

सीता अपने कर्त्तव्यों, मर्यादाओं तथा शालीनता से कभी विमुख नहीं हुई, तभी तो वे जगत्-जननी कहलाईं। आज की नारी सीता-माता से बहुत कुछ दाम्पत्य जीवन के लिए प्रेरणा आदर्श एवं सीख ले सकती है। वह शील, मर्यादा तथा लज्जा का पाठ सीता से ग्रहण कर सकती है। धर्मपत्नी वही सच्चे अर्थ में कहलाती है जो पत्नी, बीमारी, अपमान, दुःख, अभाव व मुसीबत में पति का साथ देती है। सीता-माता के कारण ही श्रीराम का रामत्व रक्षित एवं सुरक्षित रहा। जो पतन से बचाकर, धर्म, कर्त्तव्य व सन्मार्ग की ओर अग्रसर करती है। वहीं धर्मपत्नी कहलाती है। जो पुरुष को हर परिस्थिति में सम्भालती व साथ देती है। इसीलिए नारी शक्तिरूपा कहलाती है। नारी पुरुष एक दूसरे के हितैषी व पूरक होते हैं।

विवाहोपरान्त राम के राज्याभिषेक का उल्लेख है,

कैकेयी के आदेश से राम का वनगमन होता है। श्रीराम के असमय व अचानक वियोग में राजा दशरथ की मृत्यु हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि कैकेयी ने जो मंथरा की सलाह मानी, वह प्रसंग आज के नर-नारी को सचेत करता है कि अधार्मिक, बुरे विचारों वाले, स्वार्थी, कुसंस्कारी तथा दूसरे को भड़काने वाले की संगति सदैव पतन और दुःख का कारण बनती है। अच्छी संगति व्यक्ति को महान व श्रेष्ठ बनाती है। कुसंग से व्यक्ति बिगड़ता है। सत्संग से व्यक्ति सुधरता है। आज बुरे विचारों, कार्मों तथा कुसंगति के कारण ही चारों ओर पतन हो रहा है। ईर्ष्या-द्वेष तथा दूसरे की उन्नति न देख सकने के कारण व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र एक दूसरे से दूर हो रहे हैं। आज मन्थरा प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। रामायण का यह प्रसंग हमें सचेत व सावधान करता है कि किसी की झूठी बातों पर सहज विश्वास मत कर लो। किसी की झूठी प्रशंसा में पड़कर अपने धर्म-कर्म और कर्त्तव्य को मत भूलो।

कैकेयी ने मंथरा की बात मानकर अपना सुहाग नष्ट किया। जगत् में अपयश लिया। जो लोग झूठी चुगल, निन्दा-स्तुति में लगे रहते हैं उन्हें अन्त में अपमान व बुराई ही मिलती है। जिस पुत्र के लिए कैकेयी ने अधर्म किया, उसने भी उसे बुरा कहा। जो लोग अधर्म तथा गलत तरीके से धनोपार्जन करते हैं, उनका साथ सन्तानें भी नहीं देती हैं। पाप

की कमाई बुढ़ापे में रुलाती है। पाप व अधर्म से बचो, उसका फल हमें ही भोगना पड़ेगा। पाप, अधर्म, अन्याय मनुष्य को सोने नहीं देते हैं।

राजा दशरथ ने मृत्यु को स्वीकार किया किन्तु वचन से विचलित नहीं हुए। इससे आज के मानव को वचन-निर्वाह की शिक्षा मिलती है कि दशरथ ने अपने प्राण-प्रिय राम को वनवास दिया, किन्तु अपने वचन से डगमगाए नहीं। तभी तो रघुकुल का कीर्तिमान् वाक्य सर्वत्र उच्चारित होता है।

"**रघुकुल रीति सदा चलि आई,**
प्राण जाएं पर वचन न जाई।"

भर्तृहरि ने भी कहा है-

'**न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।**'

'महान् व्यक्ति सत्य, धर्म, न्याय के पथ से कठोर-से-कठोर संकट आने पर भी विचलित नहीं होते हैं।'

जब तक मानव अपने वचन पर कायम है, उसे संसार में कोई कमी नहीं। हम लोग छोटे-छोटे प्रलोभनों के पीछे अपने विश्वास व वचन को भंग कर देते हैं। आज का मानव विश्वास-भंग के कारण ही तरह-तरह की समस्याओं, उलझनों, विवादों और झगड़ों में फंसा हुआ है। विश्वास का आधार सत्य है। जहां सत्य नहीं होगा, वहां विश्वास अधिक देर तक टिक नहीं सकेगा। आज हमारे जीवन जगत से सत्य-धर्म छूट रहा है। झूठ बोलते, जीते और झूठ ही अच्छा लग रहा है। झूठ अनेक

समस्याओं, विवादों, उलझनों और पतन का कारण बनता है। व्यक्ति की पहिचान व सम्मान सत्य से होती है। महाराज दशरथ का जीवन-चरित्र हमें सत्य, न्याय एवं विश्वास की प्रेरणा व चेतना देता है।

राम के वनगमन का प्रसंग बड़ा ही मार्मिक और कारुणिक है। श्रीराम विचारवान आदर्श पुरुष थे। उन्हें न राजतिलक होने का हर्ष था, न वन जाने का विषाद। राम का कथन है-''मैं पिता की आज्ञा से समुद्र में कूदने, पहाड़ से छलांग लगाने और अग्नि में प्रवेश करने के लिए हमेशा तैयार हूं।'' ये वाक्य राम की पितृभक्ति को युगों तक जीवित, जाग्रत व प्रेरक बनाए रखेंगे। आज मानव-समाज में विकट समस्या है कि बच्चे अपने माता-पिता का कहना नहीं मानते। अनुशासन में नहीं चलते। इस समस्या के समाधान में राम का चरित्र आज की युवा पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। जो बच्चे माता-पिता का कहना नहीं मानते हैं वे आगे जीवन में पछताते और असफल होते हैं। उनके बच्चे भी बाद को उन्हें सम्मान व महत्त्व नहीं देते हैं। तब वे पछताते हैं। श्रीराम ने पिताजी की आज्ञा से सुख, भोग साधन, राज्य आदि को एक क्षण में छोड़ दिया। ऐसे प्रेरक प्रसंगों से ही तो भारत की संस्कृति सभ्यता जीवित-जागृत और प्रेरक रही है। श्रीराम ने कोई तर्क-वितर्क नहीं किया। कोई अपने अधिकार की मांग नहीं की, मात्र कर्त्तव्य देखा। आज की पीढ़ी में कर्त्तव्यभाव छूट रहा है और अधिकार भावना

कठोरता से बढ़ रही है।

ऐसे ही जो वृद्धजन हैं, वे भी अपने आदर्श व कर्त्तव्य को समझें और युवाजन भी अपने दायित्व, मर्यादा व कर्त्तव्य का पालन करें तो दुःखों और समस्याओं से छूटा जा सकता है। इससे जीवन-परिवार एवं समाज सुखी, प्रसन्न व शान्त रहेगा।

इसी प्रसंग में सीता का वन में साथ श्रीराम के जाना इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ देता है। वनवास राम को मिला था, सीता को नहीं, फिर भी सीता पति की अनुगामिनी बनी। सीता का यह कथन-''पतिदेव! यह कैसे हो सकता है कि आप तो वनों में रहें और मैं अयोध्या के महलों में सुख-चैन से रहूं। आपके बिना मेरे लिए स्वर्ग का वैभव भी तुच्छ है। मैं छाया की भांति आपके साथ रहूंगी।'' सीता का यह पवित्र पतिव्रत धर्म आज की भोग-विलास तथा श्रृंगार में फंसी नारी को युग-युग तक प्रेरणा एवं जीवन दृष्टि दे सकता है। सीता ने अधिकार नहीं, कर्त्तव्य को देखा। प्रेम, सेवा और त्याग तीनों गौरव पूर्ण आदर्श नारी के आभूषण माने गए हैं। इन्हीं गुणों से नारी सबको अपना बना लेती व जीत लेती हैं। सीता माता में ये तीनों दैवीयगुण थे। संसार इसी कारण उनमें दैवीय भावना व पूज्यभाव रखता है। हमारी संस्कृति में कर्त्तव्य अधिकार से ऊंचा माना गया है। जहां कर्त्तव्य-बोध है, वहां शान्ति, प्रसन्नता व सन्तोष है। जहां अधिकार की भावना है, वहां दुःख, कलह व अशान्ति है। आज व्यक्ति अधिकार के लिए सचेत हो रहा है

और कर्त्तव्यों को भूल रहा है। झगड़े अधिकारों के लिए होते हैं, कर्त्तव्य के लिए नहीं।

इसी सन्दर्भ में लक्ष्मण का भाई हेतु वनगमन भाइयों की प्रीति का उत्कृष्ट प्रमाण है। ऐसी मधुर, प्रगाढ़ एवं त्यागमयी श्रीराम एवं लक्ष्मण की प्रीति आज के मानव को, जो भाई-भाई के रक्त का प्यासा हो रहा है इस मानसिकता को बहुत कुछ सोचने-समझने के लिए प्रेरणा दे सकती है। श्रीराम तथा लक्ष्मण का भातृ-प्रेम का आदर्श उदाहरण माना जाता है। टूटते हुए पारिवारिक सम्बन्धों को राम, लक्ष्मण और भरत जैसा परस्पर प्रेमपूर्ण त्याग ही जोड़ सकता है। आज प्रेम व त्याग घट रहा है और स्वार्थ एवं भोगवृत्ति बढ़ रही है।

भरत का त्याग, आदर्श भ्रातृभक्ति और हृदय की पवित्रता संसार के इतिहास में कहीं नहीं मिलेगी। भरत स्वार्थ में भरी अपनी माता को वैरिन समझते हैं। उन्हें राज शासन, सुख-विलास कुछ अच्छा नहीं लगा। राजगद्दी श्रीराम और भरत के बीच ऐसे एक-दूसरे की ओर फेंकी जा रही है, जैसे बच्चे गेंद उछालते हैं। भरत को राज्य की चाह नहीं है, राम

अपने संकल्प एवं वचन पर अडिग है। इस प्रेम व त्याग ने दोनों को महान् बना दिया। जहां त्याग की भावना रहती है, वहां प्रेम, सौहार्द, सम्मान और आदर्श रहते हैं। श्रीराम और भरत के राज्यत्याग का आदर्श, जो आज धन-सम्पत्ति तथा जमीन के लिए भाई-भाई कोर्ट-कचहरी में लड़ रहे हैं। परस्पर बोलचाल बन्द हो गई है। एक दूसरे के दुश्मन हो रहे हैं। खून के रिश्ते स्वार्थ व पैसे के बन गए हैं। जिन्हें स्वार्थ, अहंकार व लोभ, पागल व अन्धा बना दिया है, उनके लिए यह प्रेरक उदाहरण अन्धेरे में रोशनी का कार्य कर सकता है। उन्हें ज्ञान, विचार तथा सोच की दिशा दे सकता है।

हम लोग छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए परस्पर झगड़ते, एक दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं। अपने सुख, स्वार्थ, भोग व आराम के लिए अपने ही सगे-सम्बन्धियों को छुरा मारते हुए भय, लज्जा तथा संकोच नहीं करते हैं। आज जीवन तथा जगत में स्वार्थ, लोभ, लालच, अहंकार और अपने तक ही सीमित होना, अनर्थ के कारण हैं। इसी कारण अनेक समस्याएं, झगड़े व मुसीबतें आती हैं। रामायण हमें शिक्षादे रही है कि नश्वर सुख, भोग-विलास तथा धन, धाम, धरा के लिए परस्पर रक्त मत बहाओ। पद, सम्मान एवं कुर्सी के पीछे अपने धर्म, ईमान, सिद्धान्त, विचार व सच्चाई का रास्ता मत छोड़ो। इतिहास तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। परस्पर त्याग, स्नेह, सद्भाव से उन्नति करो। एक दूसरे के सम्मान की रक्षा करो। मिलकर सोचो और

मिलकर उन्नति करो, इसी में भलाई है। यही रामायण सिखाती है।

भरत द्वारा राम की पादुकाएं राजसिंहासन पर रखकर सेवक की तरह कार्य करना राजनीतिज्ञों को आदर्श शिक्षा दे रहा है। पद प्रतिष्ठा तथा कुर्सी के लिए लड़ाई व विवाद मत करो। दुनिया के इतिहास में ऐसा प्रेरक, अनमोल, अद्वितीय उदाहरण न मिलेगा जहां तेरह साल तक खड़ाऊं ने राज्य किया हो। विदेशी लोग आश्चर्य करते हैं, लगता नहीं है? कि सच में ऐसा हुआ है! स्वार्थ व व्यक्तिगत द्वेषों से ऊपर उठें और जीवन में त्याग की भावना लाएं तभी व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। लोभ एवं स्वार्थ से ऊपर उठकर ही सच्ची सेवा हो सकती है। दूषित स्वार्थपूर्ण राजनीति व राजनीतिज्ञों को श्रीराम का जीवन चरित्र बहुत कुछ सीख, समझ व दृष्टि दे रहा है।

इसके पश्चात् श्रीराम, सीता और लक्ष्मण का तपस्वी वेष में, पर्ण-कुटिया बनाकर चित्रकूल में निवास करना वर्णित है। वे कन्द, मूल और फल खाते हुए तपस्वियों की तरह संध्या-यज्ञ एवं ऋषि-मुनियों की रक्षा करते हुए जीवन व्यतीत करने लगे। वनवास काल में भीलनी ने जो श्रीराम का श्रद्धा-भक्ति, प्रेम तथा सेवाभाव से आतिथ्य किया वह इतिहास प्रसिद्ध हो गया। भारतीय संस्कृति-सभ्यता में अचानक आए अतिथि के प्रति श्रद्धा-प्रेम का अतिरेक स्वाभाविक होने लगता

है। उसी का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन झूठे बेर खाना बन गया।

इसी अवसर पर रावण की बहन शूर्पणखा का श्रीराम जी के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखने, श्रीराम द्वारा मना करने, अधिक हठ करने और सीता को मारने तक की कोशिश करने पर लक्ष्मण द्वारा उसकी नाक काट लेना आदि का वर्णन है। नाक काटना, नाक कट जाना, ये मुहावरे बने हुए हैं। इनका प्रतीकार्थ है कि नाक सम्मान व पहिचान का प्रतीक है। नाक काटने का यहां भाव है कि सूर्पणखा के प्रस्ताव को ठुकरा देना, अपमानित कर देना है। उसकी बात को न मानना है। प्रत्यक्ष रूप से लक्ष्मण ने उसकी नाक नहीं काटी थी। जब किसी की बात को नहीं माना जाता है तो लोकमत में कहते हैं तुमने हमारी नाक कटवा दी।

उक्त घटना से प्रेरण मिलती है कि जैसे श्रीराम अपनी पत्नी सीता से ही सन्तुष्ट और पत्नीव्रती थे, ऐसे ही यदि हम सन्तुष्ट व सुखी रहना चाहते हैं तो हमें भी सीमा, मर्यादा तथा नैतिकता में रहकर पत्नीव्रती बनना चाहिए। श्रीराम परस्त्रीगमन को अत्यन्त निकृष्ट और कुमार्गगामी मानते थे। वे एक स्त्री से अधिक विवाह करना पाप, अधर्म, मर्यादाहीनता और समाज को दूषित करना मानते थे। वे अपनी मर्यादा में अडिग रहे। जहां मर्यादाएं टूटती व छूटती हैं वहां विकृतियां आती है।

आज के सभ्य समाज में ये दोनों रोग भयंकर रूप से फैल रहे हैं। परस्त्री के भोग की प्रवृत्ति से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र बिखर रहे हैं। इससे अनेक बुराईयां तेजी से

फैल रही हैं। मानव-समाज में भोग-वासना की विकृतियां तेजी से फैल रही हैं। परिणाम सामने हैं तेजी से भोगवासना की आग फैल रही है। युवापीढ़ी मर्यादाहीन होकर अनैतिक कर्मों की लपेट में आ रही है। धार्मिक क्षेत्र भी इस आग से अछूता नहीं रह पा रहा है धर्म के रक्षक जीवनादर्शों के भक्षक बन रहे हैं। जब तक व्यक्ति नियम, संयम, मर्यादा, नैतिक मूल्य, धार्मिकता आदि नहीं अपनाएंगे, तब तक समाज में सुधार नहीं होगा। यह आग अन्दर-ही-अन्दर समाज को खाए जा रही है। एक से अधिक विवाह करने की बीमारी भी हमारे सभ्य समाज में पनप रही है। इसीलिए मानव दानव बनकर भोग-वासना का कीड़ा बनता जा रहा है। उसका शील, सदाचार, मर्यादाएं एवं आदर्श टूट रहे हैं। श्रीराम के जीवन का एक पत्नीव्रत आदर्श इस घातक रोग से हमें छुड़ा व बचा सकता है। श्रीराम राजा थे। कई विवाह कर सकते थे, उन्होंने नहीं किया। उन्होंने पिता की सारी बातें मानी मगर अपने पिता दशरथ की तरह दूसरा विवाह नहीं किया। दशरथ ने तीन विवाह किए थे। भोग वासना वह आग है इसमें जितना डालते जायेंगे उतनी बढ़ती जायेगी। इस दिशा में श्रीराम का तप-त्याग तथा मर्यादा पूर्ण जीवनादर्श मानव समाज के लिए मील का पत्थर है।

आगे सीता-हरण का प्रसंग है। पंचवटी के आस-पास कई बड़े-बड़े राक्षस रहते थे। इन राक्षसों में रावण का मित्र मारीच था। वह बड़ा धूर्त और विचित्र वेश बनाने में निपुण

था। मारीच सोने के हिरण का वेश बनाकर राम की कुटिया के आगे से होकर निकला। सीता उस आकर्षक व सुन्दर मृग को देखकर मोहित हो गई। उसने श्रीराम से कहा–'इसे पकड़ लाइए।' राम लक्ष्मण को कुटी पर सीता की रक्षार्थ छोड़कर मायावी मृग के पीछे दौड़े। दौड़ते–दौड़ते कुटी आंख से ओझल हो गई । श्रीराम ने उस मायावी मृग को बाण मारकर समाप्त कर दिया। मरते समय वह चिल्लाया–हाय लक्ष्मण, 'हाय सीता' यह घटना हमें सिखाती है कि सभी चमकीली चीजें सोना नहीं होती हैं। मोहक, चमकीली, आकर्षक चीजों व बनावटी लोगों से बचना चाहिए। आज का जीवन और जगत बाहर कुछ और है, अन्दर कुछ और भरा हुआ है। कई बार व्यक्ति बाहर के धोखे में आकर बहुत कुछ अपना लुटाकर और गलत रास्ते पर चल पड़ता है। जो जीवन के लिए अभिशाप बन जाता है। ऐसे प्रलोभनों व आकर्षणों से बचना व सावधान रहना चाहिए।

कष्ट व दर्दभरी श्रीराम की आवाज सुनकर सीता चिन्तित हो उठी। लक्ष्मण ने बहुत समझाया कि यह श्रीराम की आवाज नहीं है। यह मायावी मृग की माया है। सीता ने लक्ष्मण को जोर–जबरदस्ती डांटकर श्रीराम की सहायता के लिए भेज

दिया। लक्ष्मण के जाते ही रावण साधू का वेश बनाकर सीता के पास भिक्षा के लिए आया। कुटी से बाहर सीता के आते ही उन्हें उठाकर लंका की ओर ले गया। लक्ष्मण श्रीराम की सहायता के लिए जाते हुए सीता से कह गए थे, कुटी से बाहर मत निकलना, कुछ भी अनर्थ हो सकता है। यही लक्ष्मण रेखा थी। लक्ष्मण रेखा मर्यादा की प्रतीक है। नारी का शील सदाचार, लज्जा और चरित्र मर्यादा व सीमा में रहने पर ही सुरक्षित मर्यादित व सम्मानित रहता है। जहां मर्यादा टूटती और ढ़ीली पड़ने लगती है वहीं से पतन आरम्भ होने लगता है। सीता माता से भी यह भूल हुई वे लक्ष्मण रेखा (मर्यादा) से बाहर निकलीं। रावण द्वारा अपहरण हो गया। आज की नारी जगत को रामायण से यह प्रेरणा शिक्षा व सन्देश लेना चाहिए। नियम व्यवस्था मर्यादा अनुशासन लज्जा आदि में रहकर ही जीवन सुखमय, मंगलमय और प्रेरक बन सकता है। लज्जा, शील व मर्यादा नारी के सच्चे आभूषण होते हैं। इनसे बाहर होते ही पतन शुरू होने लगता है।

इस घटना से हमें सीख लेनी चाहिए कि किसी के बाह्य स्वरूप पर तुरन्त विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। पहले सोच-विचार करके और प्रसंग समझकर ही आगे बातचीत में बढ़ना चाहिए। आज हमारे समाज में बहुत ढ़ोंगी, पाखण्डी, दिखावटी गुरु, महन्त, ज्योतिषी, महाराज और साधु बने घूम रहे हैं। कदम-कदम पर धोखा, छल, असत्य, प्रपंच तथा ठगी के काम हो रहे हैं। ऊपर से साधु नजर आते हैं अन्दर से पूरे

स्वादु होते हैं। स्त्रियों में धर्मभावना, विश्वास श्रद्धा व सेवा की भावना अधिक होती है, वे जल्दी ही बहकावे में आ जाती हैं। रामायण कह रही है-'नकली ढ़ोंगी, पाखण्डी, कामी और लालची गुरुओं, महन्तों तथा महाराजों से बचो। भोली-भाली स्त्रियों को ठगने, चुराने, भगाने की घटनाएं प्रतिदिन हो रही हैं। किसी को नकली चीज दिखाकर असली के बहाने ठगा जा रहा है। आज हर चीज में नकलीपन बढ़ रहा है। अन्दर कुछ है और बाहर कुछ दिखाया जा रहा है। अधिकांश लोग अन्दर से पूरे छली, प्रपंची, ढ़ोंगी, दिखावटी तथा स्वार्थी हो रहे हैं। ऊपर से बड़े सौम्य, सरल, धर्मात्मा व सज्जन बन रहे हैं। रामायण यह कहती है कि दुनिया में आंखें खोल कर चलो। बुद्धि और विवेक से काम लो। दिखावटी, बनावटी, चमकीली, भड़कीली चीजों और लोगों से बचो। दुनिया में धोखे बहुत हैं।

सीता-हरण प्रसंग से प्रेरणा मिलती है कि हम अपने अन्दर आसुरी प्रवृत्ति को नहीं बढ़ने देंगे। हमारे अन्दर बैठा हुआ रावण दिन-रात सीता को खोजने और भगाने की योजना में रहता है। हम अपनी हृदय की धड़कनों पर हाथ रखकर सोचें तो सही कि परनारी के प्रति हमारे भाव कितने अपवित्र और वासनात्मक हैं, पाप और वासनाएं हमारे हृदय की सात्विकता व पवित्रता को नष्ट कर रही हैं। चेहरे पर कामुकता, अतृप्ति, वासना और मलिनता है। समाज में नगर-नगर, गली-गली और घर-घर रावण बढ़ एवं पल रहे हैं।

हर साल हम रामलीला में कागज के रावण को जला

देते हैं, परन्तु हमारे अन्दर की रावणवृत्तियां बढ़ती जा रही हैं। पहले एक रावण था, आज अनेकों हैं। रामायण के पढ़ने वालो सोचो, विचारो और अपने को बदलो। रावण की लीला को छोड़ दो। शुद्ध राम बन जाओ। कल्याण जो जाएगा। राक्षस से देव बन जाओ। यही तो वेद भी कहता है–

''**उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।**''

''हे परमात्मा की श्रेष्ठ संतान, मानव! तेरा धर्म और उद्देश्य ऊपर उठना है। नीचे मत गिरो, राक्षस मत बनो।'' देव बनो।

जटायु एक तपस्वी साधु था, पक्षी नहीं। आज यह भ्रान्त धारणा फैली हुई है कि जटायु पक्षी था। रावण ने उसके पंख काट दिये थे। जटायु एक तपस्वी मानव थे। पंचवटी में श्रीराम की कुटिया से थोड़ी दूर पर जटायु नामक वानप्रस्थी तपस्वी की कुटिया थी। श्रीराम और जटायु आपस में मिलते रहते थे। परस्पर निकटता और प्रीति हो गई। सीता अपहरण के बाद श्रीराम सीता को खोजते-खोजते उधर निकले तो देखा सीता को बचाने के लिए रावण से लड़ते-लड़ते घायलावस्था में जटायु पड़े हैं। प्राण निकलने वाले थे। जटायु ने सीता को संघर्ष करते हुए छुड़ाने की सारी कहानी बताई। उसी समय उनका प्राणान्त हो गया। जटायु के चरित्र में सच्चे मित्र के गुण थे। मित्रता की खातिर उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी। आज मित्रता स्वार्थपूर्ण हो रही है। सच्चा निःस्वार्थी मित्र मिलना दुर्लभ हो रहा है। सच्चा मित्र संकट में साथ देता है।

यह प्रमाणिक सत्य है कि श्रीराम एक आदर्श महापुरुष थे। परमात्मा या ब्रह्म नहीं थे। उनके कर्म, चरित्र और आदर्श इतने उच्च और महान् थे कि श्रद्धा-भक्ति तथा आदर में हम उन्हें भगवान् कहते हैं। किसी को भगवान् शब्द से सम्बोधन करना, सबसे बड़ा उच्च सम्मान देना है। शास्त्र कहते हैं जिनके पास ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य ये छः चीजें हैं। ये विशेषताएं व गुण वेद के शब्दों में भग कहताते हैं। उन्हें भगवान कहते हैं। प्रातः कालीन प्रार्थना में आता है ***भगएव भगवानस्तुः*** जिसके पास भग है वे भगवान हैं। मनुष्य भी भगवान बन सकता है, उसके ज्वलन्त उदाहरण हैं - श्रीराम और श्रीकृष्ण, वे गुण, कर्म, स्वभाव, तप, त्याग, सेवा और श्रेष्ठ कर्मों से स्मरणीय, वन्दनीय महापुरुष कहलाये। वे सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, परमेश्वर नहीं थे। ईश्वर सृष्टि की उत्पति, पालन-पोषण, संहार और जीवों के कर्मानुसार फल देने का कार्य करता है। श्रीराम परमात्मा के चारों कार्यों के करने में असमर्थ थे। अतः वे ईश्वर नहीं थे। वे श्रेष्ठ गुणों से युक्त प्रेरक मर्यादा पुरुषोत्तम, असाधारण महापुरुष थे। यदि वह परमात्मा होते तो साधारण मनुष्य की तरह पशुओं-पक्षियों, लताओं तथा वृक्षों से विलाप करते हुए सीता का पता न पूछते ? परमात्मा तो त्रिकालदर्शी है, वह भविष्य का भी ज्ञाता है, फिर श्रीराम जी को तो अपनी पत्नी सीता का भी पता नहीं था। श्रीराम के जीवन तथा आचरण में सभी देवोचित,पूज्य गुण, कर्म और स्वभाव थे। वे मानवता के आदर्श थे। उनके सभी

कर्म लोक-संग्रह की भावना से युक्त थे। अगर हम उन्हें एक आदर्श महामानव मानेंगे तो उनके चरित्र से बहुत कुछ सीख सकेंगे और उनके आदर्शों का अनुकरण कर सकेंगे। रामायण कहती है कि श्रीराम के समान अपना जीवन तथा व्यवहार बनाओ। ***जेहि विधि रहे राम, तेहि विधि रहे रहिए।*** श्री राम ने संसार में रहते हुए अपने सभी दायित्वों, कर्त्तव्यों, जिम्मेदारियों आदि को कुशलता, सुन्दरता एवं मर्यादा पूर्वक निर्वाह किया। वैसे हम भी दुनियां में रहते हुए अपनी जीवन यात्रा को सार्थक एवं प्रेरक बनाएं। यही श्रीराम और रामायण का अमर सन्देश है। रामायण में वे बातें, आदर्श व विचार हैं, जो मानव समाज को श्रेष्ठ पवित्र व उच्च बनाते हैं।

जाते हुए किष्किन्धा में सीता अपने आभूषणों को पहिचान के लिए रास्ते में फेंकती गई, जिससे श्रीराम जी को उसे खोजने में प्रमाण मिल जाए। श्रीराम सीता के आभूषणों को हाथ में लेकर लक्ष्मण से पूछने लगे-'पहिचानो ये आभूषण तुम्हारी भाभी के ही हैं न?' इस पर लक्ष्मण ने बड़ी नम्रता-पूर्वक उत्तर दिया-"शरीर के ऊपर के अंगों में पहने जाने वाले आभूषणों को नहीं पहिचान सकता हूं। मैं केवल पैरों के पायजेबों के सम्बन्ध में कह सकता हूं कि ये माता सीता के ही हैं, क्योंकि प्रातः चरण-वन्दना करने के कारण उनकी मुझे पहचान है।"

रामायण का यह प्रसंग आज के मनचले, कामी तथा वासनाओं में फंसे युवकों को पुकार-पुकार कर कह रहा है कि श्रीराम, रामायण और रामलीला से कुछ सीखना है तो

चरित्र-निर्माण, आचार-विचार की शुद्धता, उच्चता, दिव्यता एवं पवित्रता सीखो। हमारी आंखों में वासनाएं भरी हैं। ऐसी दशा में लक्ष्मण का आदर्श एवं सात्विक चरित्र आज के कामुकता एवं वासना में लिप्त समाज को बहुत कुछ प्रेरणा सन्देश और आदर्श दे सकता है। आचार-विचार और चरित्र की श्रेष्ठता का ऐसा उच्चतम् उदाहरण विश्व के इतिहास में अन्यत्र न मिलेगा। भोग-विलास और आधुनिकता के चक्र में पड़ी युवापीढ़ी आचार-विचार व चरित्र की शिक्षा लेना चाहे तो लक्ष्मण से बढ़कर प्रेरक उदाहरण न मिलेगा। आज आपसी पारिवारिक सम्बन्ध, भोग-विलास की लालसा के कारण दूषित, कलुषित और कलंकित हो रहे हैं। केवल श्रीराम का नाम लेने और रामायण के पाठ से बात नहीं बनेगी। परिवर्तन तो आचरण से ही होगा। आज मनुष्य चारित्रिक व मानवीय दृष्टि से अपनी साख, विश्वसनीयता एवं पहिचान खो रहा है।

रावण सीता को लंका की ओर लिए जा रहा था। सीता रथ से कूदने लगी। तब रावण बोला-"थोड़ी देर में लंका पहुंच जाओगी। वहां ऐसे सुख,भोग, सुविधाएं, ऐश्वर्य मिलेंगे कि वन के जीवन को भूल जाओगी। कुटी के बदले आसमान को चूमता महल मिलेगा, जिसका फर्श चांदी का और दीवारे सोने की हैं। जहां गुलाब और कस्तूरी की सुगन्ध आठों पहर उठती है। एक भिखारी पति के बदले तुम्हें ऐसा पति मिलेगा, जिसकी उपमा इस धरती पर नहीं है।"

सीता जी को क्रोध आ गया, बोलीं-"छली, कपटी,

जबान संभाल कर बोल। सती के साथ ऐसा व्यवहार तेरे काल का कारण बनेगा। तू अपने धन-ऐश्वर्य से मुझें लुभा नहीं सकता। मैं पतिव्रता हूं। मेरे आराध्य श्रीराम ही हैं।'' सीतामाता का ये प्रेरक शिक्षाप्रद व आदर्श कथन भारत की संस्कृति सभ्यता में ही मिलेगा। ये अमर वाक्य युगों-युगों तक पथभ्रष्ट भोगी-विलासी नारी को सन्मार्ग दिखाता रहेगा।

आज अपने को आधुनिक कहलाने वाली, भोग-विलास, श्रृंगार और ऐशो-आराम ही जिनके जीवन का मात्र लक्ष्य है, ऐसी नारियों को सीता का यह आदर्श चरित्र, प्रेरक विचार, त्याग तथा पतिव्रता धर्म नई दृष्टि व जीवन दे सकता है। आज नारी अपनी भोगी, विलासी और श्रृंगारी प्रवृत्ति के कारण दासता की बेड़ियों में जकड़ती जा रही है। जीवन से तप, त्याग कर्त्तव्य और सेवा के आदर्श हटते जा रहे हैं। सीता में एक आदर्श नारी के सभी गुण विद्यमान थे। वे पत्नी, भाभी मां आदि सभी भूमिकाओं की कसौटी पर पूरी उतरती हैं।

इसके उपरान्त हनुमान जी का सीता की खोज में लंका पहुंचना वर्णित है। हनुमान जी ने अनेक संकटों एवं कठिनाइयों को पार करके अशोक-वाटिका में सीता को रामनाम अंकित अंगूठी दी। हनुमान जी एक कुशल सेनापति थे। उन्हें इच्छानुसार रूप बदलने और हल्का -भारी हो जाने की सिद्धि प्राप्त थी। प्रथम भेंट में ही श्रीराम ने लक्ष्मण से हनुमान जी के बारे में कहा था-'' **अवश्य ही यह व्यक्ति वेदशास्त्र ज्ञाता, व्याकरणवेत्ता,**

उचकोटि का विद्वान् और कुशाग्रबुद्धि है।'' वस्तुतः हनुमान जी बली, योद्धा और पूर्ण ब्रह्मचारी थे। उनके चरित्र में सच्चे मित्र भक्त और सेवक के गुण थे। उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगाकर मित्रता का मोल चुकाया। इसीलिए वे आज संसार में स्मरणीय, पूजित, सम्मानित एवं वन्दनीय हैं।

आज मन्दिरों, तीर्थों लोक कथाओं तथा पुस्तकों तथा लोक में हनुमान जी का जो स्वरूप मिलता है, वास्तव में वह विकृत अतिशयोक्तिपूर्ण एवं अमानवीय है। हनुमान जैसा आदर्श, पवित्र, संयमी, व्रती एवं संकल्पी चरित्र इतिहास में दुर्लभ है, किन्तु हमारी अज्ञानता, अन्धविष्वास और भ्रांति ने सब कुछ धूमिल कर दिया है। हनुमान जी सच्चे अर्थों में श्रेष्ठ महामानव थे। वे बन्दर नहीं थे। उनके स्वरूप को विकृत करके दिखाना, उनके साथ अन्याय है।

रामायण और हनुमान-चालीसा पढ़ने वाले लोगों ने हनुमान के उच्चतम जीवन-दर्शन से कुछ सीखा नहीं है। उनका प्रेरक व पवित्र जीवन हमें सच्ची मित्रता, आदर्श सेवाभाव और निःस्वार्थ कर्त्तव्य-परायणता की भावना देता हे। ब्रह्मचर्य के पूर्ण व्रती हनुमान जी में अद्‌भुत बल, शक्ति और साहस था। हम अपने बच्चों को हनुमान जी के आदर्श बल, शक्ति, सेवा और सच्ची मित्रता आदि के प्रेरणादायक आदर्श दृष्टि व विचार दे सकते हैं।

आगे श्रीराम रावण का घमासान युद्ध होता है। भयंकर नर-संहार में रावण का समूल कुल नष्ट हो जाता है। श्रीराम

लंका का राज्य विभीषण को सौंपकर दलबल सहित अयोध्या लौट आते हैं बाल्कीकि के अनुसार रामायण यहीं पर पूरी व समाप्त हो जाती है। बाद की रामायण में बहुत सी बातें प्रसिद्ध व बढ़ा चढ़कर वर्णित हैं जो अप्रमाणिक हैं। इसी प्रसंग में प्रेरक घटना आती है। लंका विजय पर लक्ष्मण जी ने श्रीराम से कहा था। लंका का सामाज्य हमने कष्ट-कठिनाईयों और बड़ी मुश्किल से जीता है। हम किसी को नहीं देंगे। तब श्रीराम ने स्वर्णाक्षरों में अंकित होने वाला अमर ऐतिहासिक अमर सन्देश दिया था।

''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयती''

अपनी जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है। रावण पुलस्त्य ऋषि का पौत्र था। शिव का परम भक्त था। वेदों और शास्त्रों का ज्ञाता था। किन्तु मांस-मदिरा, दुरित सोच-विचार और अधार्मिकवृत्ति के कारण उसकी पदवी राक्षस हो गई थी। वह भी हमारी तरह ही मनुष्य ही था। रावण आचार-विचार से पतित होकर सर्वनाश को प्राप्त हुआ। अन्ततः राक्षसी वृत्ति आदमी को विनाश की ओर ले जाती है।

आज के मानव-समाज में रावण-वृत्ति तेजी से फैल रही है। आज का मानव दानव बनकर मांस, मदिरा, परस्त्रीगमन, छल, प्रपंच, अधर्म, पाप आदि बुराईयों को जीवन में अपनाता जा रहा है किन्तु भूल रहा है कि गलत सोच-विचार और दुराचरण से अन्त में रावण की तरह विनाश ही होता है। अन्याय, अधर्म, असत्य और दानवीय वृत्तियां पहले तो रावण

की तरह फलती-फूलती और फैलती है, किन्तु अन्त में उसे समूल नष्ट-भ्रष्ट कर देती हैं। पाप मनुष्य को बेचैन, परेशान करता तथा रुलाता है। मनुष्य को पाप, अधर्म अन्याय और बुराईयों से बचना चाहिए। परमात्मा की न्याय तथा कर्मफल व्यवस्था से कोई बच नहीं सकता है। उसकी मार में आवाज नहीं होती है। डरो! वह बड़ा जबर्दस्त है। जब पाप अधर्म व अन्याय का घड़ा भर जाता है तब फोड़ता है। अहंकारी रावण क्या था और क्या हो गया। परमात्मा जिन्हें दण्ड देता है उनकी बुद्धि, विचार, सोच, हालात, परिस्थिति आदि बदल देता है। रावण के पतन व विनाश से सबक लेना चहिए। हर साल रामलीला में कागज के रावण को जला देते हैं, मगर जो हमारे अन्दर रावण वृत्ति है वह दिन व दिन बढ़ती और फैलती जा रही है। उन्हें मारकर ही हम मानव से महामानव बन सकते हैं।

हमारा खान-पान, आचरण,जीविका, शुद्ध-पवित्र तथा धार्मिक, सात्विक होने चाहिए। अपने महान पुरुषों की शिक्षाओं, आदर्शों, परम्पराओं और जीवन-मूल्यों के प्रति हमारे मन में श्रद्धा-विश्वास तथा आस्था होनी चाहिए। हमने जीवन जगत में श्रीराम की तरह रहना व जीना है। रावण बनकर नहीं जीना है। संसार में रावण नाम नहीं मिलेगा श्रीराम शब्द को आगे-पीछे जोड़कर लोगों के असंख्य नाम हैं। रावण नाम अधर्म, पाप और राक्षसवृत्ति का प्रतीक बन गया है।

श्रीराम लंका की विजय के बाद लंका का राज्य स्वयं भोग सकते और राजा बन सकते थे। किन्तु बड़े सहज रूप से

जिसका हक था उसे सौंप दिया। हमारी मनोवृत्ति दूसरे के अधिकार को छीनने की बढ़ती तथा बनती जा रही है। वर्तमान की कलुषित, दूषित राजनीति और राजनीतिज्ञ श्रीराम के जीवनादर्शों से बहुत कुछ प्रेरणा, शिक्षा व सन्देश ले सकते हैं। आज धार्मिक क्षेत्र में भी अधार्मिकता, अराजकता, संग्रह व भोगवृत्ति बढ़ रही है। अधार्मिक लोग धर्मभक्ति व आध्यात्म के क्षेत्र में तेजी से आ रहे हैं। श्रीराम का चरित्र हमे त्यागवृत्ति की दृष्टि व विचार दे रहा है। पद लिप्सा के त्याग का सर्वोत्तम उदाहरण श्रीराम का जीवन-दर्शन है। ऐसा ज्वलन्त उदाहरण संसार के इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ होगा। श्रीराम का यह आदर्श पूर्ण-त्याग प्रेरणा देता है कि जीवन का सच्चा सुख, शान्ति और आनन्द यदि लेना चाहते हो तो जीवन में त्यागवृत्ति अपनाओ और पराए धन का लोभ मत करो। पाप का बाप लोभ-लालच माना जाता है। भारत की संस्कृति-सभ्यता और जीवन-दर्शन तप, त्याग की दृष्टि व सन्देश देता है। पाश्चात्य सभ्यता और जीवन दर्शन भोगवादी रहा है। आज भोग विलास व धन का लालच बढ़ रहा है। धार्मिकता, आध्यात्मिकता, नैतिकता और मानवता की सोच-विचार घट रहे हैं। इसी का परिणाम है सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच रही है। मानव श्रेष्ठ प्राणी होकर भी पशुता व पतन की ओर जा रहा है।

संक्षेप में रामायण और श्रीराम का अमर सन्देश आज के भूले-भटके तथा राक्षसी-वृत्तियों की ओर बढते मानव-समाज को यही सन्देश दे रहा है कि ''अपने जीवन आचार-विचार

को उच्च, पवित्र, धार्मिक, तपस्वी, त्यागी एवं आदर्शपूर्ण बनाओ, बुरे विचारों व कर्मों का परित्याग करो। मांस, मदिरा, आदि राक्षसी खान-पान को छोड़ो। ये भोजन हमारी बुद्धि व वृत्ति को बदल देता है। श्रीराम का जीवन पुकार-पुकार कर कह रहा है- ऊपर उठो। आचरण को सुधारो।'' उज्ज्वल प्रेरक, आदर्श मूलक नैतिक मानवीय मूल्यों व मर्यादाओं को उल्लंघन मत करो।

श्रीराम तथा रामायण हमें संसार में कैसे जीना, रहना, आचरण करना इसकी शिक्षा, प्रेरणा और मार्ग दर्शन कदम-कदम पर दे रहे हैं। यदि मानव अपने इहलोक तथा परलोक-दोनों को सुधारना व सम्भालना चाहे तो श्रीराम का प्रेरक जीवन-चरित्र सबसे बड़ा आदर्श है। सच्चे अर्थ में श्रीराम का नाम लेने वाला और रामायण का पाठ करने वाला कभी माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करेगा। उन्हें सतायेगा नहीं। पर स्त्री की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखेगा। मांस-मदिरा का सेवन नहीं करेगा। किसी का हक नहीं मारेगा। जीवन मूल्यों में पतित नहीं होगा।

महापुरुषों के जन्म दिन, पर्व, जयन्तियां आदि संसार को जगाने और संभलने की प्रेरणा देने आते हैं। प्रतिवर्ष हम श्रीराम का जन्म दिवस, रामनवमी, विजय दशमी, रामलीलाएं, रामायण कथाएं, कीर्तन, यात्राएं, उत्सव, पर्व एवं कार्यक्रम आयोजित करते हैं। पूजा पाठ, भक्ति, कीर्तन तथा रामायण पाठ करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। दुःखद

पीड़ा है कि हम सब श्रीराम को तो मानते हैं मगर उनकी बातों, आदर्शों तथा विचारों पर ध्यान नहीं देते हैं? उनके बताए रास्ते पर नहीं चलते हैं। हम केवल चित्रपूजा तक ही अपने को सीमित कर लेते हैं। सच तो ये है कि हम चित्र का सम्मान करें और चरित्र की पूजा करें। उनके सर्वत्र टंगे हुए चित्र हमें चरित्र निर्माण की शिक्षा, प्रेरणा तथा सन्देश दे रहे है।। सोचो। समझो और करो। श्रीराम का नाम बोलने, रामनामी वस्त्र ओढ़ने, मन्दिर में जाने, रामायण का पाठ करने, जयकारा बोलने और जलूस निकालने से जीवन-जगत में परिवर्तन, सुधार व निर्माण न होगा। बदलाव तो सोच-विचार, बदलने, आचरण, व्यवहार आदि के सुधार से आयेगा। हम लोग सौभाग्यशाली हैं कि हमें आदर्श, प्रेरक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की विरासत, वसीयत और परम्परा मिली है। हम उनके वंशज हैं। फिर भी हम अपना जीवन जगत सुधार, संभाल और आदर्शकोटि का नहीं बना पा रहे हैं। यह दुर्भाग्य ही कहलायेगा। श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन आज के भूले-भटके मानव-समाज को सत्य, न्याय, धर्म, कर्त्तव्य, मर्यादा आदि की प्रेरणा प्रदान करता है। यदि हम उनके आदर्श जीवन से अपने जीवन तथा जगत को सुखी, सन्तुष्ट, प्रसन्न, शान्त और मंगलमय बना सकें, तभी उनके नाम-स्मरण, जय-जयकार करने, कीर्तन, पूजा-पाठ आदि की सफलता, उपयोगिता, सार्थकता है।

- t -